2 सितंबर 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 8
सितंबर (प्रथम), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अपनों से अपनी बात....

एक नई पहल : शोध संस्था

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद के विशेष आग्रह पर दिनांक २३ अगस्त को आयोजित **अपनों से अपनी बात** के अंतर्गत **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा स्नातकों को कालजयी विद्वान बनाने के प्रथम चरण स्वरूप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अंतर्गत एक **शोध संस्थान स्थापित करने की घोषणा की गई।** साथ ही इसकी अनेक शाखाएँ स्थापित करने की प्रबल भावना भी व्यक्त की।

वर्तमान समय में जैनदर्शन को साहित्य के क्षेत्र में उच्चस्तर प्राप्त कराने, जैनदर्शन के गूढ़-गंभीर एवं अचर्चित विषयों को जन-जन तक पहुँचाने, जैनदर्शन के इतिहास से दुनिया को परिचित कराने एवं अपनी विद्वत्ता को प्रमाणिकता प्रदान कर कालजयी विद्वान बनने की दृष्टि से **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मंगल आशीर्वाद एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के आयोजकत्व में यह उत्कृष्ट कार्य शीघ्र ही प्रारंभ किया जाएगा।**

समयसार व्याख्यानमाला प्रारम्भ

कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त युवा विद्वान **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** द्वारा दिनांक **२८ अगस्त** से प्रतिदिन **ग्रंथाधिराज समयसार** की **ज्ञायकभाव प्रबोधिनी** (डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल कृत) टीका के आधार से व्याख्यानमाला का शुभारंभ हुआ, जिसका नियमित **LIVE** प्रसारण **प्रात: 09:20 से Dr. Sanjeev godha** यूट्यूब चैनल पर किया जा रहा है।

इस अवसर का भरपूर लाभ लेने के लिए पण्डित रतनचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा समयसार ग्रंथ नि:शुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है एवं आप तक पहुंचने की नि:शुल्क व्यवस्था सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट द्वारा की गई है। **संपर्क करें - 9990007475**

आगामी कार्यक्रम....

दशलक्षण महापर्व का विशिष्ट ऑनलाइन आयोजन

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के तत्त्वावधान में दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर **दिनांक १० से १९ सितम्बर** तक ऑनलाइन प्लेटफॉम के माध्यम से विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: अरिहंत चैनल पर डॉ. भारिल्लजी के प्रवचन प्रसारण के पश्चात् ०६:४५ से **श्री दशलक्षण महामण्डल विधान** का भव्य आयोजन किया जाएगा। तदुपरांत ०९:०० बजे से **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा धर्म के दशलक्षण पर विशेष प्रवचन एवं १०:०० बजे से पूज्य गुरुदेवश्री के विडियो प्रवचन का प्रसारण किया जाएगा।

दोपहर ०२:०० से ०३:३० तक तत्त्वार्थसूत्र के १-१ अध्याय का वाचन एवं तत्त्वार्थसूत्र के विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा प्रतिदिन १-१ अध्याय का विश्लेषण किया जाएगा।

तत्पश्चात् सम्यग्दर्शनस्वरूप समयसार पर पण्डित बिपिनजी शास्त्री, मुंबई एवं सम्यग्ज्ञानस्वरूप प्रवचनसार पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर की कक्षाओं का लाभ मिलेगा।

रात्रि ०७:०० बजे से श्री जिनेंद्रभक्ति, अध्यात्मपाठ एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन १-१ धर्म पर सारगर्भित वक्तव्य के उपरांत ०८:०० से देश के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा प्रथम व्याख्यान एवं ०८:४५ डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ द्वारा द्वितीय व्याख्यान होगा। साथ ही अनेक ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाएगा।

संपूर्ण कार्यक्रम का प्रसारण **WWW.PTST.LIVE** एवं स्मारक के यूट्यूब चैनल के माध्यम से किया जाएगा।

(21) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

चतुर्थ अध्याय का सार (मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र का निरूपण)
(गतांक से आगे...)

सम्यकत्व की प्राप्ति में प्रयोजनभूत तत्त्वों के ज्ञान को अनिवार्य बतलाकर अब यहाँ प्रयोजनभूत तत्त्वों के सम्बन्ध में अयथार्थ श्रद्धान की चर्चा करते हैं। इसीप्रकार की कुछ चर्चा आगे **सातवें अधिकार** में भी करेंगे और यहाँ **चौथे अधिकार** में भी कर रहे हैं। ध्यान रहे ! सातवें अधिकार में चर्चा **गृहीत मिथ्यात्व** की मुख्यता से की गई है; जबकि यहाँ चौथे अधिकार में **अगृहीत मिथ्यात्व** की मुख्यता से की गई है।

जीव-अजीव तत्त्व संबंधी अयथार्थ श्रद्धान....

मैं कौन हूँ? मेरा क्या स्वरूप है? मैं चैतन्य तत्त्व हूँ - यह जीव ऐसा विचार तो नहीं करता; अपितु इससे विपरीत कर्म के उदय से प्राप्त नवीन पर्यायों में मैं-पना मानता है। मैं चैतन्य तत्त्व हूँ और यह शरीर स्पर्श-रस-गंध-वर्णादिक वाला है - ऐसा दोनों को भिन्न-भिन्न नहीं पहचानता; एक ही मानता है। कभी कहता है कि- यह मेरे हैं और कभी कहता है कि - मैं इनका हूँ। इस प्रकार **एकत्व** और **ममत्व** बुद्धि करता है।

जीव और शरीर की परस्पर निमित्त-नैमित्तिक संबंध से होने वाली क्रियाओं को अपनी मानता है। ऐसा समझता है कि- मैंने स्पर्श किया, मैंने खाया, मैंने आँखों से देखा, मैंने कानों से सुना। यहाँ जिसने जाना वह तो मैं हूँ, जिसके माध्यम से जाना गया, वह इंद्रियाँ हैं एवं जिन्हें जाना, वह पृथक पुद्गल हैं - **ऐसा भेद-विज्ञान नहीं करता**। जैसे बोलने की इच्छा हुई तो कहता है, मैं बोलता हूँ। यहाँ बोलने की इच्छा तो जीव का विभावरूप कार्य है, इच्छा के होने पर जो आत्मप्रदेशों में चंचलता हुई, वह जीव का स्वभावरूप कार्य है तथा शरीर के अंगोपांग आदि का हिलना हुआ, वह पुद्गल की क्रिया है - **ऐसा भेद-विज्ञान नहीं करता**। जैसे बोलने पर लगाया, वैसे ही सभी चीजों पर लगाना। जैसे क्रोध का होना तो जीव का विभाव भाव है, क्रोध को जानना, यह जीव का स्वभाव भाव है तथा उसके साथ नेत्रों का लाला होना शरीर की क्रिया है; **लेकिन इन तीनों को भिन्न-भिन्न नहीं जानता है।**

हम जब भी कोई कार्य करते हैं, तो उसमें नियम से यह तीनों क्रियाएँ होती हैं - **१) स्वभाव रूप क्रिया २) विभाव रूप क्रिया ३) जड़ की क्रिया।**

इन तीन क्रियाओं से मैं कहाँ हूँ? मैं किसका कर्ता हूँ? इसका विचार करना है। **जड़ की क्रिया शरीर की है, विभाव की क्रिया रागादिक की है और स्वभाव की क्रिया जीव की है।**

पण्डितजी कहते हैं - शरीर का मिलना-बिछुड़ना तो लगा रहता है, शरीर कभी मोटा होता है, कभी पतला होता है; परंतु यह जीव उसमें मैं पना करता हुआ, स्वयं को ही मोटा-पतला समझता है। स्वयं तो अमूर्तिक होने से भासित नहीं होता; जबकि शरीर आदि मूर्तिक होने से भासित होते हैं। आत्मा का स्वभाव ऐसा है कि वह किसी को आप रूप जानकर अहम् बुद्धि धारण किए बिना रह नहीं सकता। इसलिए **येन-केन-प्रकारेण अपने को और शरीर को एक ही मानता है,** यही इसकी जीव-अजीव तत्त्वसंबंधी भूल है।

जीव और शरीर में निमित्त-नैमित्तिक संबंध बहुत हैं। वे इतने सूक्ष्म हैं कि आसानी से पकड़ में ही नहीं आते। जहाँ बोलने की इच्छा होती है, वहाँ बोल देता है। पता ही नहीं लगता कि इसमें मेरा कार्य क्या हुआ और शरीर का कार्य क्या हुआ?

यहाँ कोई कहे कि इतना ज्ञान होने पर भी इतनी-सी बात समझमें क्यों नहीं आती? उसको स्पष्ट करते हुए पण्डितजी बहुत ही मार्मिक बात कहते हैं - **जिस विचार के द्वारा भिन्नता भासित होती है, वह विचार मिथ्यादर्शन के जोर से हो ही नहीं सकता।**

हमारे जीवन में सुबह से शाम तक अनेकों ऐसी घटनाएँ घटती हैं, जहाँ भेद-विज्ञान के अनेकों अवसर मिलते हैं। जैसे कभी सिर दर्द होता है, सिर के बाल झड़ते हैं, सर्दी, खांसी-जुख़ाम आदि सब हमारी बिना इच्छा के होते है। हम चाहते कुछ और हैं तथा होता कुछ और ही है - ऐसे प्रसंगों में यदि यह जीव गहराई से विचार करे तो भेदविज्ञान हो सकता है; परन्तु मिथ्यादर्शन के जोर से उस भेद पर दृष्टि जाती ही नहीं है। यही इसकी जीव-अजीव तत्त्व संबंधी भूल है।

आस्रव व बंध तत्त्व संबंधी अयथार्थ श्रद्धान....

यहाँ मोह के उदय से जो मिथ्यात्व, कषायादिक भाव होते हैं, उन्हें अपने किए हुए मानता है, अपना स्वभाव समझता है। मोह के निमित्त से हुए रागादि विकारी भाव हैं और ज्ञानादि मेरे स्वभाव हैं, **ऐसा भेद-विज्ञान नहीं करता।**

यह आस्रव भाव वर्तमान में तो दु:खदायक हैं ही, भविष्य में भी दु:ख का कारण होंगे - ऐसा नहीं मानता और **इन्हें भला जानकर मिथ्यात्व आदि रूप प्रवृत्ति करता है।**

आस्रव पूर्वक बंध होता है। बंध के मूल में आस्रव है। **जब**

आस्रव को ही नहीं पहिचानता, तो बंध को कैसे पहिचाने?

बंध के उदय में मिथ्यात्वादिक के कारण सुखी–दु:खी होता है, अनुकूल–प्रतिकूल संयोग प्राप्त करता है। वहाँ मिथ्यात्वादिक को तो सुख–दु:ख का कारण नहीं मानता तथा संयोग को सुख–दु:ख का कारण मानकर सुखी–दु:खी होता है। यह इसकी आस्रव–बंध तत्त्व संबंधी भूल है।

संवर–निर्जरा–मोक्ष तत्त्व संबंधी अयथार्थ श्रद्धान....

आस्रव का विरोधी संवर है। इस जीव ने अनादि काल से आस्रव ही किया है, संवर कभी किया ही नहीं, तो संवर को सुख रूप कैसे माने? जब–तक यह जीव आस्रव को अहितकारी नहीं जानेगा, तब–तक उसके अभाव में प्रकट होने वाले **संवर को हितकारी कैसे मानेगा?**

बंध के एकदेश अभाव का नाम निर्जरा है। यह जीव कर्मबंधन को दु:ख का कारण ना मान कर सयोगों को दुख का कारण मानता है। इसलिए **बंध के नाश के उपाय रूप निर्जरा को सुख का कारण नहीं मानता।**

बंध के पूर्ण अभाव का नाम मोक्ष है। यह जीव सुखी तो होना चाहता है, लेकिन बंध के नाश होने पर सुखी होगा – ऐसा नहीं मानता तथा इष्ट संयोगों को जुटाकर सर्वदा सुखी होना चाहता है। यह इसकी संवर–निर्जरा–मोक्ष तत्त्व संबंधी भूल है।

पुण्य–पाप संबंधी अयथार्थ श्रद्धान....

पुण्य और पाप दोनों की जाति एक है; परन्तु यह जीव **पुण्य को भला और पाप को बुरा जानता है।**

पुण्य कर्म के उदय से प्राप्त अनुकूल संयोगों को तो भला मानता है तथा पाप कर्म के उदय से प्राप्त प्रतिकूल संयोगों को बुरा मानता है। वास्तव में तो दोनों ही आकुलता के कारण होने से बुरे ही हैं; परंतु यह **पुण्य–पाप के उदय में प्राप्त पदार्थों को भी भला–बुरा मानता है।**

पुण्य के उदय में जो शुभ भाव होते हैं, उन्हें भला मानता है तथा पाप के उदय में जो अशुभ भाव होते हैं, उन्हें बुरा मानता है। परमार्थ से तो दोनों बंध के कारण होने से बुरे ही हैं; परंतु यह **पुण्य पाप के निमित्त से होने वाले भावों को भी भला–बुरा मानता है।**

इसप्रकार यह जीव पुण्य–पाप को, उनके उदय में मिलने वाले संयोगों को तथा उनके निमित्त से होने वाले भावों को भला बुरा जानता है – यह इसकी पुण्य–पाप संबंधी भूल है।

इसप्रकार जीवादि सात तत्त्व संबंधी अयथार्थ श्रद्धान का वर्णन किया। इस **अयथार्थ श्रद्धान** का नाम ही **अतत्त्वश्रद्धान** है।

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

9 **– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया**

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 92 – ज्ञायक रूप से ज्ञात हुआ आत्मा ही शुद्धात्मा है – इसमें 'ज्ञायकरूप से ज्ञात हुआ' का क्या अर्थ है स्पष्ट कीजिए?

उत्तर – यह आत्मा जानने में ही आता है और जानता भी है। जानने में आने के कारण इसे ज्ञेय कहते हैं और जानने वाला होने से ज्ञायक कहते हैं। अन्य सभी पदार्थ भी ज्ञेय हैं। इस ज्ञायक भाव में अनंत गुण व्याप्त हैं, अनुभव में अखण्ड अभेद आत्मा ही आता है; तथापि ज्ञायकता उसकी विशेष पहचान है। ज्ञायक भाव आत्मा का ऐसा विशेष गुण है कि जानने का काम तो करता ही है, आत्मा की पहचान का चिह्न भी बनता है। अनुभूति में भी जो आत्मा ज्ञान का ज्ञेय बनता है, उसमें भी आत्मा के ज्ञायक भाव की मुख्यता होती है, ज्ञेयभाव की नहीं। अत: यह कहा जाता है कि अनुभूति में आत्मा ज्ञायकरूप से ही ज्ञात होता है।

प्रश्न 93 – ज्ञायक भाव को उपासित होता हुआ शुद्ध कब कहा जाता है? या ज्ञायक भाव को अनुभव में आता हुआ शुद्ध कब कहा जाता है?

उत्तर – जब पर के साथ का ज्ञेय–ज्ञायक संबंध छूटकर आत्मा ही ज्ञेय और आत्मा ही ज्ञायक – इसप्रकार जो ज्ञेय–ज्ञायक भी अभेद हो जाते हैं तब ज्ञायक भाव को उपासित होता हुआ (अनुभव में आता हुआ) शुद्ध कहा जाता है।

प्रश्न 94– शुद्धात्मा कौन है?

उत्तर – जो प्रमत्त नहीं अप्रमत्त नहीं मात्र एक ज्ञायक भाव रूप ज्ञात हुआ अनुभव में आता हुआ आत्मा ही शुद्धात्मा है।

प्रश्न 95 – ज्ञायक आत्मा और शुद्धात्मा में क्या अन्तर है?

उत्तर – दोनों में कुछ अन्तर नहीं है। ज्ञायक आत्मा और शुद्धात्मा एक ही हैं, बस वह तो वही है, ज्ञाता ही है।

प्रश्न 96– क्या आत्मा द्रव्य और पर्याय दोनों दृष्टि से शुद्ध है?

उत्तर – नहीं, आत्मा द्रव्य और पर्याय दोनों दृष्टि से शुद्ध नहीं है। द्रव्यदृष्टि से द्रव्य वही है; ज्ञायक तत्त्व ही है, वह कहीं जड़ नहीं हुआ है, अत: द्रव्यदृष्टि से आत्मा शुद्ध है। पर्यायदृष्टि से देखा जाए तो मलिन ही दिखाई देगा। पर्याय में आत्मा पुद्गल कर्म के निमित्त से रागादिरूप मलिन है। अत: पर्यायदृष्टि से आत्मा अशुद्ध है।

प्रश्न 97 – यह अशुद्धता आत्मा में कैसे आती है?

उत्तर –आत्मा में अशुद्धता परद्रव्य के संयोग से आती है। **(क्रमश:)**

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कौन–कहाँ?

सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर वर्तमान की विकट परिस्थितियों में भी समाज के तत्त्वजिज्ञासु जीवों द्वारा प्राप्त आमंत्रणों के आधार पर पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। सरकार के दिशा–निर्देशों का पालन एवं अधिक प्रचार–प्रसार की दृष्टि से इस बार दशलक्षण पर्व का आयोजन फिजिटल (फिजिकल एवं डिजिटल) दोनों रूपों में किया जा रहा है। दिनांक २७ अगस्त २०२१ तक प्राप्त जानकारी के अनुसार निर्धारित सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर : जयपुर, **बाल ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन, अमायन :** द्रोणगिरी, **बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना :** सम्मेद शिखरजी, **बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, सनावद :** आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली, **पंडित अभयकुमारजी, देवलाली :** नवरंगपुरा, (अहमदाबाद) **पंडित हेमचंदजी हेम, देवलाली :** ज्ञानोदय (भोपाल), **पंडित प्रदीपजी झांझरी, उज्जैन :** सूरत, **पंडित शैलेशभाई, तलोद :** अहमदाबाद (वस्त्रापुर), **पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर :** चैतन्यधाम (अहमदाबाद), **डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर :** देवलाली, मुंबई (ऑनलाइन), **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर :** अमेरिका/ऑस्ट्रेलिया/भारत (ऑनलाइन), **डॉ. राकेशजी शास्त्री, नागपुर :** श्री महावीर जिनालय, नागपुर, **पंडित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे :** राजकोट, **पंडित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर :** देवलाली एवं मुंबई (ऑनलाइन) **पंडित बिपिनजी शास्त्री, मुंबई :** जयपुर (ऑनलाइन), **पं. देवेंद्रकुमारजी बिजोलिया :** इंदौर(साधनानगर) , **डॉ. प्रवीणजी शास्त्री, बांसवाड़ा :** इन्दौर (रामाशा मंदिर), **पंडित विपिनजी शास्त्री, नागपुर :** चैतन्यधाम (अहमदाबाद), **पंडित संजयजी शास्त्री, कोटा :** दुबई (ऑनलाइन), **पंडित राजकुमारजी शास्त्री, उदयपुर :** जबलपुर, **डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ :** जयपुर (ऑनलाइन), कोलकाता (ऑफलाइन), **पण्डित अनिलजी शास्त्री, भिण्ड :** भोपाल (चौक) **ब्र. श्रेणिकजी, जबलपुर :** शिकागो, **ब्र. कल्पनाबेनजी सागर :** मंगलायतन(अलीगढ़)।

हिम्मतनगर : पं. रजनीभाई हिम्मतनगर, **रतलाम :** डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्य जयपुर , **द्रोणगिरी :** पंडित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, **मुमुक्षु आश्रम (कोटा) :** पंडित धर्मेंद्रजी शास्त्री कोटा, **सागर(तारण–तरण) :** पं. अशोकजी शास्त्री उभेगांव, **करेली :** पं. अशोकजी लुहाड़िया अलीगढ़, **बीना :** पं. प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर, **शिवपुरी :** पं. कमलचंदजी पिड़ावा, **शिवपुरी(नेमिनाथ जिनालय) :** पं. सुरेशजी टीकमगढ़, **सम्मेद शिखरजी :** पं. अलोकजी शास्त्री कारंजा एवं पं. संयमजी शास्त्री देशमाने, **दिल्ली(मयूर विहार) :** पं. राकेशजी शास्त्री लोनी, **सिंगोली :** पं. नागेशजी शास्त्री पिड़ावा एवं पं. अनिकेतजी शास्त्री भिंड, **आरोन :** पं. विरागजी शास्त्री जबलपुर, **उज्जैन :** पं. विक्रांतजी शाह सोलापुर, **भोपाल(कोहेफिजा) :** डॉ. सचिनजी शास्त्री गढ़ाकोटा, **द्रोणागिरी :** ब्र. महेंद्रजी शास्त्री अमायन, **सोनागिर :** पं. सुरेशजी शास्त्री, पं. सुकुमालजी शास्त्री गुना एवं डॉ. मुकेशजी 'तन्मय' विदिशा, **दीवानगंज(भोपाल)** पं. रतनचंदजी सागर, **राधौगढ़ :** पं. संजयजी पुजारी इंजी. खनियांधाना एवं पं. अशोकजी शास्त्री मांगुलकर, **बेगमगंज :** पं. अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, **इंदौर :** पं. सुबोधजी सिवनी, **सिलवानी :** पं. अभिषेकजी उभेगांव एवं ब्र. सुधाबहनजी उभेगांव, **बड़नगर :** डॉ मनोजकुमारजी जबलपुर, **गुना(मुमुक्षु मण्डल) :** ब्र. कैलाशचंदजी अचल, **सनावद :** पं. अश्विनजी शास्त्री नानावटी नौगांव, **उदयपुर(मुमुक्षु मंडल) :** पं. ऋषभजी शास्त्री अमरकोट, **उदयपुर (गायरियावास) :** पं. गजेंद्रजी शास्त्री भिंडर, **उदयपुर (से. ११) :** पं. खेमचंदजी शास्त्री गुढ़ाचंद्रजी, **उदयपुर :** पं. संदीपजी मेहता उदयपुर, **कोटा :** पं. प्रेमचंदजी बजाज, **झालरापाटन :** ब्र. नन्हे भैया एवं पं. विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन, **वस्त्रापुर(अहमदाबाद) :** पं. नीलेशभाई मुंबई, **अहमदाबाद(पालडी) :** पं. सोनूजी शास्त्री वस्त्रापुर, **राजकोट :** डॉ. अभिषेकजी शास्त्री पालडी, **अशोकनगर :** पं. अनुभवजी मंगलार्थी करेली, **टीकमगढ़ :** पं. ज्ञाताजी सिंघई, **सागर(महावीर जिनालय) :** पं. अखिलेशकुमारजी शास्त्री, **छिंदवाड़ा :** पं. संजयजी शास्त्री परतापुर, **भिंड(देवनगर) :** पं. सुरेंद्रकुमारजी इंदौर, **गौरझामर :** पं. निर्मलजी सिंघई सागर, **जबेरा :** विदुषी राजकुमारीजी सनावद, **दिल्ली(विश्वास नगर) :** पं. मनोजजी शास्त्री करेली, **खैरागढ़(छत्ती.) :** पं. अभयजी शास्त्री एवं पं. सुदीपजी शास्त्री शाहपुरा, **कोलकाता(पश्चिम बंगाल) :** पं. मनीषजी शास्त्री इंदौर, **रूड़की(उत्तराखंड) :** पं. अरुणकुमारजी मोदी सागर, **खेकड़ा :** पं. संयमजी शास्त्री सांझ, **जाबरा :** पं. चेतनजी शास्त्री कोटा, **सहारनपुर :** पं. सम्मेदजी शास्त्री टीकमगढ़, **मेरठ :** पं. शुभमजी शास्त्री दीवानगंज, **कानपुर :** पं. अनुभवजी शास्त्री जबलपुर, **ललितपुर :** विदुषी प्रमिलाजी जैन इंदौर, **जैतपुर :** पं. कमलचंदजी जबेरा, **बिनौली :** पं. अशोकजी शास्त्री उज्जैन, **अकोला :** पं. जयकुमारजी शास्त्री कोटा, **नागपुर (महावीर जिनालय) :** पं. संयमजी शास्त्री नागपुर, **कापरेन :** पं. वंशजी शास्त्री कोटा, **देवलगांवराजा :** पं. जिनचंद्रजी शास्त्री कोल्हापुर, **चित्तौड़गढ़ :** पं. सुमितजी शास्त्री सेमारी, **उदयपुर (नेमिनाथ जिनालय) :** पं. महावीरजी शास्त्री टोकर, **बिजोलिया :** पं. सुलभजी मंगलार्थी झांसी, **पिडावा :** पं. अंकुरजी शास्त्री भोपाल, **देवली(ज्योति नगर) :** पं. चेतनजी शास्त्री आगरा, **देवली :** पं. दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, **नरोड़ा :** पं. अनिलजी जैन मुंबई, **बेलगांव(कर्नाटक) :** पं. धनसिंहजी पिड़ावा, **सुलतानपुर :** पं.साकेतजी शास्त्री जयपुर, **मोरवी :** पं. ज्ञायकजी शास्त्री, **दिल्ली(शिवाजी पार्क) :** पं. संभवजी शास्त्री दिल्ली, **दमोह :** पं. स्वप्निल जी शास्त्री सिवनी, **सिवनी :** पं. आप्तअनुशीलजी शास्त्री दमोह, **हरदा :** पं. अरविंदजी शास्त्री, खडैरी एवं पं. समर्थजी शास्त्री जयपुर, **विदिशा :** पं. अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना, **गंधवानी :** पं. वैभवजी शास्त्री ग्वालियर, **मौ :** पं. संदेशजी शास्त्री दिल्ली एवं पं. अमनजी शास्त्री खनियांधाना, **नरवर :** पं. अनर्घ्यजी शास्त्री विदिशा, **सागर(मकरोनिया) :** पं. पारसजी शास्त्री खेकडा, **ललितपुर :** पं. प्रशान्तजी शास्त्री खेकडा, **दलपतपुर :** पं. पलजी शास्त्री गांधीनगर।

शोक समाचार

१. चंदेरी के प्रतिष्ठित समाजसेवी प्रसिद्ध विद्वान पंडित चुन्नीलाल जी शास्त्री के तृतीय पुत्र श्री जयकुमारजी बंसल का २५ अगस्त को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया है। आप डॉ. राजेंद्रजी बंसल व श्रीमती गुणमालाजी(ध.प. डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल) के भाई थे। श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक संजयकुमारजी बंसल शास्त्री दर्शनाचार्य के पिता थे। आप पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों के प्रबल समर्थक थे। आपने श्री टोडरमल महाविद्यालय में एक छात्र के आजीवन अध्ययन हेतु ५ लाख रुपये का सहयोग भी प्रदान किया था। आप जयपुर में आयोजित शिविरों में पधारकर तत्वज्ञान का लाभ लेते थे। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा तीर्थ आदिश्वर चंदेरी में एक कक्ष के निर्माण हेतु १ लाख एवं देश के अन्य विभिन्न क्षेत्रों हेतु ६४ हजार के साथ स्मारक ट्रस्ट को ११००० की राशि घोषित की गई।

२. श्री दिगम्बर जैन गंज मंदिर, मालथौन के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमारजी चौधरी का दिनांक ७ अगस्त २०२१ को शांतपरिणामों सहित देहपरिवर्तन हुआ। आप टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों से सदा जुडे रहे। तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में आपका सदैव सहयोग रहता था। आपकी स्मृति में २५००० रूपये की राशि दान स्वरूप प्राप्त हुई है; एतदर्थ धन्यवाद !

३. स्वर्गीय श्री अभिनन्दनकुमारजी रांझी, जबलपुर की स्मृति में ११००/– रूपये की राशि साहित्य दान हेतु प्राप्त हुई।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र ही परमपद को प्राप्त करें।

डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा दशलक्षण – LIVE

दशलक्षण महापर्व के मंगल प्रसंग पर प्रात: 08.00 बजे से प्रतिदिन जयपुर के विविध प्राचीन जैन मंदिरों के दर्शन एवं 08.15 से पं. टोडरमलजी के मंदिर से श्री दशलक्षण पूजन तत्पश्चात् 09.15 से समयसार विषय पर प्रवचनों का लाभ मिलेगा। दोपहर में 02.30 से प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र के 1-1 अध्याय पर विश्लेषण एवं 03.45 से सम्पूर्ण प्रवचनसार की विषयवस्तु को 10 दिन में समझाया जायेगा। रात्रि में 08.00 से धर्म के दशलक्षण पर विशेष प्रवचन एवं 10.05 से पारस चैनल पर प्रसारित प्रवचनों का भी लाभ मिलेगा। इन सभी कार्यक्रमों का लाईव प्रसारण **Dr. Sanjeev Godha** यूट्यूब चैनल के माध्यम से किया जायेगा। आप सभी अवश्य लाभ लेवें एवं अन्य साधर्मियों को सूचित करें।

विशेष अवसर – विशेष आयोजन

❊ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के आयोजकत्व में रक्षाबंधन पर्व एवं श्री श्रेयांसनाथ निर्वाण महोत्सव के अवसर पर दिनांक **२२ अगस्त** का विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत प्रात: श्री श्रेयांसनाथ पूजन एवं रक्षाबंधन पर्व पूजन सम्पन्न हुई। इसके पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा **रक्षाबंधन की घटना पर आधारित** विशेष प्रवचन का प्रसारण किया गया।

❊ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मेरठ के तत्त्वावधान में श्री पार्श्वनाथ निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में दिनांक **१५ अगस्त २०२१** को **श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान** का आयोजन किया गया। विधानामंत्रणकर्ता के रूप में श्रीमती सीमाजी बृजमोहनजी जैन परिवार, मेरठ रहे। कार्यक्रम में पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, पण्डित मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा, पण्डित अतुलजी मेरठ एवं पण्डित आयुषजी शास्त्री मेरठ का विद्वत्समागम प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त दिनांक **१४ अगस्त** को रात्रि में पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा द्वारा **भगवान पार्श्वनाथ की क्षमा** विषय पर एक अद्भुत संगीतमयी प्रस्तुति की गई।

❊ **स्वतंत्रता दिवस** के अवसर पर दिनांक १५ अगस्त को रात्रि १०:०० बजे पारस चैनल के माध्यम से डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के **जन–जन की स्वतंत्रता सहित कण–कण की स्वतंत्रता की घोषणा** करने वाले मार्मिक व्याख्यान का प्रसारण किया गया। साथ ही **रक्षाबंधन पर्व** के विशेष प्रसंग पर दि. २२ अगस्त को भी रात्रि १०:०० बजे पारस चैनल पर प्रासंगिक प्रवचन हुआ। ज्ञातव्य है की प्रवचनों का टी.वी. पर प्रतिदिन प्रसारण हो रहा है।

❊ **रक्षाबंधन पर्व** के मंगल अवसर पर दिनांक २२ अगस्त २०२१ को पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, कोटा द्वारा **वात्सल्य प्रधान पर्व : रक्षाबंधन** पर मुनिराजों के प्रति भक्ति भाव से ओतप्रोत एक विशिष्ट संगीतमयी प्रस्तुति दी गई।

❊ भारत के **स्वाधीनता दिवस** की ७५ वीं वर्षगांठ के पावन अवसर पर कहान शिशु विहार विद्यालय, सोनगढ़ और जिनदेशना द्वारा दिनांक १५ अगस्त २०२१ को आयोजित कार्यक्रम में प्रात:काल विद्यालय के प्राचार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री, सोनगढ़ के कर–कमलों द्वारा **ध्वजबंधन** किया गया एवं रात्रि में पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर द्वारा **भारत की स्वतंत्रता एवं उसकी आन–बान–शान में जैन सेनानियों के बलिदान** को स्मरण करते हुए द्वि–दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

सहजता

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

नहीं है जिसमें कोई तनाव, नहीं है जिसमें कोई विकल्प।
नहीं है जिसमें कोई दोष, नहीं है कोई भी आक्रोश।।
सहजता जीवन का उल्लास, सहजता निर्विकल्प आनन्द।
सहजता स्वास और उस्वास, सहजता ही है परमानन्द।। १।।

अरे रे पर को पर स्वीकार, न उनमें कुछ करने का भाव।
और अपनी पर्यायों को, सुनिश्चित क्रमनियमित स्वीकार।।
न उनमें फेरफार का भाव, एकदम सरल सहज स्वीकार।
न उनमें हर्षाहर्ष विभाव, सहजता जीवन का आधार।। २।।

सहजता जीवन का आधार, वस्तु का सम्यक् रूप निहार।
जगत का सहज परिणमन देख, होय बस उसे सहज स्वीकार।।
सहजता जीवन का इक लक्ष्य, सहज जीवन ही हो स्वीकार।
और जीवन का परम पवित्र, ज्ञान–दर्शन का हो व्यापार।। ३।।

जगत का कोई भी परद्रव्य, नहीं होता है इष्ट–अनिष्ट।
स्वकाल में उदित सहज परिणमन, अरे होता है सदा विशिष्ट।।
अरे वह भी होता है अचल, नहीं होता उसमें कुछ बदल।
सभी सम्यग्ज्ञानी जन को, अरे स्वीकृत होता है सहज।। ४।।

जगत का सभी परिणमन अरे, पूर्णतः पूर्व सुनिश्चित है।
नहीं करना है कुछ भी हमें, क्योंकि वह पूर्ण व्यवस्थित है।।
अरे इस परम सत्य की सहज, स्वीकृति सहज सहजता है।
यही है दर्शन–ज्ञान–चरित्र, ध्यान की सहज अवस्था है।। ५।।

ध्यान की सहज अवस्था है, ज्ञान की गौरव–गरिमा है।
अरे रे जीवन का आनन्द, आत्म की अद्भुत महिमा है।।
सहजता सहज धर्म का मर्म, धर्म सरिता की तरल तरंग।
संत साधर्मी का सत्संग, धर्मकाया का उत्तम अंग।। ६।।

सभी के मन में सहज उमंग, और पुलकित हैं सारे अंग।
बना है अद्भुत आत्मप्रसंग, और मानस में विपुल तरंग।।
खिले हैं सबके सारे अंग, आत्म–अनुभव की तरल तरंग।
जगत में सहज सहजता अरे, समाई हैं सबमें सर्वांग।। ७।।

सहजता सब द्रव्यों का धर्म, सहजता का न कहीं अभाव।
सहजता ना छोड़े कोई द्रव्य, सभी के अपने–अपने भाव।।
सभी स्वाधीन सहज परिणमें, सहजता जीवन का आधार।
सहजता की सामर्थ्य अपार, अरे महिमा है अपरंपार।। ८।।

सहजता सब द्रव्यों का भाव, सहजता सबका सहज स्वभाव।
किसी का हम पर कोई न भार, सभी हैं अपने जिम्मेवार।।
स्वयं के परिवर्तन का भार, नहीं है हम पर हम निर्भार।
सहजता का सम्यक् स्वीकार, करे हम सबका बेड़ा पार।। ९ ।।

करे हम सबका बेड़ा पार, यही है मुक्तिमग का द्वार।
यही है अद्भुत आतम शान्ति, यही है परमानन्द अपार।।
यही है सम्यग्दर्शन–ज्ञान, यही है निश्चय धर्मद्ध्यान।
यही है मन–वच–काय निरोध, यही है सहज समाधि योग।।१०।।

सहज जीवन है सहज समाधि, न जिसमें आधी–व्याधि–उपाधि।
समाधि है सुखमय जीवन, मरण का उससे क्या सम्बन्ध।।
समाधिमय जीवन में देहान्त, सुनिश्चित क्रमनियमित अनुसार।
यदि हो जावे तो उसको कहा जाता है समाधीमरण।।११।।

सहज समभावमयी जीवन समाधि का है सम्यक्रूप।
मोह अर क्षोभ रहित समभाव सहज ही अद्भुत और अनूप।।
समाधि धारण करके बन्धु अरे जीवन का करें सुधार।
मरण तो एक समय का कार्य मरण का कैसे करें सुधार?।।१२।।

(रोला)

अरे सहजता जीवन का सर्वांग सत्य है।
सबका सब कुछ निश्चित है – यह महासत्य है।।
सबका सबकुछ सहज स्वयं से ही होता है।
अधिक कहें क्या सब स्वकाल में ही होता है।। १३।।

(कुण्डलिया)

सभी सहज ही परिणमें अपने क्रम अनुसार।
परिवर्तन संभव नहीं करो सहज स्वीकार।।
करो सहज स्वीकार चित्त को न भरमावो।
सहज भाव से अपने आतम में आ जावो।।
अपने को तो अपना आतम परम शरण है।
मुक्तिमार्ग में श्रेष्ठकार्य आतम–अनुभव है।। १४।।

परिचर्चा सानन्द सम्पन्न

सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट एवं मातृभाषा उन्नयन संस्था के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक १६ अगस्त २०२१ को **जैनदर्शन में शोध : आवश्यकता, संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ** विषय पर विमर्श का आयोजन किया गया।

डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर की अध्यक्षता एवं **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर** के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित इस परिचर्चा के प्रमुख वक्ता डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, दिल्ली एवं डॉ. संजयजी शास्त्री, दौसा रहे।

परिचर्चा का संचालन पण्डित अंकुरजी, भोपाल एवं मंगलाचरण पण्डित जिनेशजी, मुंबई ने किया।

"ब्राह्मी-सुंदरी शिलान्यास महोत्सव" सम्पन्न

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर व मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा के तत्त्वावधान में एवं ब्राह्मी–सुंदरी विद्या निकेतन ट्रस्ट, दिल्ली के आयोजकत्व में दिनांक **१८ से २० अगस्त २०२१** तक ब्राह्मी–सुंदरी विद्या निकेतन का भव्य **शिलान्यास महोत्सव** एवं **पंचपरमेष्ठी विधान** सानंद संपन्न हुआ।

विधानाचार्य पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा के निर्देशन में, पण्डित विवेकजी शास्त्री एवं पण्डित मयंकजी शास्त्री के सहयोग से विधान सम्पन्न हुआ। विधान आमंत्रणकर्ता श्रीमती रजनीजी सुरेन्द्रजी जैन, दिल्ली रहीं। पश्चात् डॉ. मनोजजी जैन का मंगल उद्बोधन एवं पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री, जबलपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकालीन सत्र में जिनेंद्र भक्ति, पूज्य गुरुदेवश्री के वीडियो प्रवचन एवं पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा व पण्डित राजेन्द्रजी जैन, जबलपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

२० अगस्त को सम्पन्न शिलान्यास महोत्सव के अंतर्गत श्री अजीतप्रसादजी जैन, दिल्ली द्वारा **ब्राह्मी–सुंदरी विद्या निकेतन**, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मेरठ द्वारा **विदुषी निलय**, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, खतौली द्वारा **अध्ययन कक्ष**, श्री वीरेन्द्रकुमारजी परिवार द्वारा **सीता आवास**, स्व. श्री रतनलालजी जैन पुत्र रविजी जैन द्वारा **अंजना आवास**, श्री नरेन्द्रजी जैन द्वारा **चंदना निवास**, श्री त्रिलोकचंदजी पारसजी जैन परिवार द्वारा **मैना–सुंदरी आवास**, श्री अमितजी जैन, सहारनपुर द्वारा **राजुल आवास**, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, विश्वास नगर, दिल्ली द्वारा **कंप्यूटर कक्ष** एवं सभी स्थानीय विद्वान एवं विदुषी बहनों द्वारा **सरस्वती भवन** का शिलान्यास किया गया।

भक्तामर स्त्रोत : कला प्रदर्शनी

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़ एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुंबई के तत्त्वावधान में दिनांक **१० अगस्त २०२१** को **भक्तामर स्त्रोत : कला प्रदर्शनी** का भव्य उद्घाटन समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। **गुरु कहान आर्ट म्यूजियम, सोनगढ़** द्वारा समय–समय पर विभिन्न ग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को सरलतम रूप से हृदयंगम करने के लिए ग्रन्थाधारित चित्रों का प्रदर्शन किया जाता रहा है। इसी शृंखला में आचार्य मानतुंग द्वारा विरचित **भक्तामर स्त्रोत** के काव्यों के रहस्य को चित्रों के माध्यम से परिभाषित किया गया। समारोह श्री हँसमुखभाई, श्री नवीनभाई, श्री राजेशभाई जवेरी, श्री निमेषभाई शाह, श्री हितेनभाई सेठ, ब्र. हेमन्तभाई गांधी, पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं पण्डित राहुलजी शास्त्री आदि की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

"सैंतालीस शक्ति" विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न

कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर स्व. श्रीमती शांतिबाई कमलचंदजी जैन, नागपुर की पुण्य स्मृति में तीर्थधाम ज्ञानायतन, नागपुर एवं श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, कारंजा के संयुक्त तत्त्वावधान में **दिनांक १९ अगस्त से २३ अगस्त २०२१ तक** अर्हद्–वार्ता के अंतर्गत **बृहद् आध्यात्मिक सैंतालीस शक्ति** विषय पर विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के प्रथम दिन **श्री अशोकजी जैन परिवार, नागपुर** द्वारा ध्वजारोहण एवं **श्री अजीतप्रसादजी जैन, दिल्ली** के कर–कमलों से उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर अयोजित सभा की अध्यक्षता श्री सतीशजी संगई ने की।

इस प्रसंग पर पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित चिंतामनजी शास्त्री कारंजा, श्री पंकजजी संगई एवं पण्डित संयमजी शास्त्री कारंजा के सहयोग से **४७ शक्ति विधान** का आयोजन भी किया गया। मुख्यकलश विराजमानकर्ता श्री अशोककुमारजी जैन, नागपुर एवं अन्य कलश विराजमानकर्ता श्री सतीशजी संगई, श्री भरतजी भोरे परिवार, पण्डित आलोकजी परिवार व श्री परिमलजी (रुईवाले) रहे।

प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वीडियो प्रवचन के पश्चात् प्रतिदिन बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजोलिया एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री मेरठ के व्याख्यानों का लाभ मिला।

नो सत्रों का आयोजित इस संगोष्ठी के प्रत्येक सत्र में तीन–तीन वक्ताओं द्वारा विषय प्रस्तुत किया गया।

संगोष्ठी के अंतिम दिन स्नातक परिषद द्वारा संचालित **अपनों से अपनी बात** एवं संगोष्ठी के **समापन समारोह** का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी देवलाली ने की। विशेषज्ञ डॉ. अनेकान्तजी दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, श्री अरुणजी मोदी एवं पण्डित जगदीशजी पवार रहे। सत्र का संचालन पण्डित अंकुरजी, भोपाल ने एवं मंगलाचरण विदुषी प्रतीतिजी मोदी ने किया। कार्यक्रम के अंत में पण्डित जिनेशजी, मुम्बई ने सभी विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के अतिरिक्त बाल ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पंडित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पंडित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पंडित हेमचंदजी देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागरजी

दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पंडित अरुणजी शास्त्री जयपुर, पंडित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पंडित संजयजी शास्त्री कोटा, पंडित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पंडित प्रकाशजी छाबड़ा इंदौर, पंडित महावीरजी टोकर, पंडित जम्बूकुमारजी मद्रास, श्री मानमलजी जैन कोटा, पंडित संतोषजी कटनी, पंडित संजयजी औरंगाबाद, पंडित महावीरजी पाटील सांगली, पंडित बाहुबलीजी भोसगे, पंडित शिखरचंदजी सागर, पंडित हर्षवर्धनजी औरंगाबाद, डॉ. किरणजी पुणे, श्री चंपालालजी भंडारी, डॉ. विवेकजी छिंदवाड़ा, श्री रमेशजी बैंगलोर, पंडित रत्नाकरजी औरंगाबाद, श्री जयंतीलालजी जैन मंगलायतन, श्री अभयजी लखनऊ, विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली, विदुषी स्वर्णलताजी नागपुर, विदुषी विजयाताईजी भिसीकर, पंडित जितेंद्रजी राठी पुणे, पंडित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पंडित अंकितजी जैन आरोन, पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर, विदुषी प्रज्ञाजी देवलाली, पंडित अनुभवजी करेली एवं पंडित समकितजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण संगोष्ठी डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन एवं पंडित संजयजी शास्त्री जयपुर, पंडित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पंडित अशोकजी जैन नागपुर, पंडित भरतजी भोरे कारंजा, पंडित विनीतजी शास्त्री हटा के विशेष सहयोग से सानन्द सम्पन्न हुई।

छपते-छपते....

श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिर एवं अध्यात्म संजीवनी स्वाध्याय परिवार जन के तत्त्वावधान में, श्री नंग-अनंग आदि साढे पाँच करोड़ मुनिराजों की निर्वाण-स्थली, सोनागिरजी में दिनांक २७ से २९ अगस्त २०२१ तक **समयसार विधान, समयसार व्याख्यानमाला शुभारंभ एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के अखिल भारतीय अभिनंदन समारोह** का आयोजन किया गया।

समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

परमागम ऑनर्स विशेष कार्यक्रम सम्पन्न

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित 44 वें अध्यात्मिक e - शिक्षण शिविर के अंतर्गत दिनांक 14 अगस्त 2021 को परमागम ऑनर्स द्वारा विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सत्र संचालिका विदुषी स्वानुभूतिजी, मुंबई ने परमागम ऑनर्स की गतिविधियों का परिचय देते हुए अपनी नवीनतम योजनाओं की जानकारी दी एवं परमागम ऑनर्स के नए लोगो को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के कर-कमलों द्वारा लॉन्च कराया।

पश्चात् Fireside Chat के अंतर्गत **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, आत्मख्याति मर्मज्ञ डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं लोकप्रिय प्रवचनकार डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** के द्वारा परमागम ऑनर्स के विद्यार्थियों के जीवनोपयोगी प्रश्नों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाधान किया गया।

इस प्रसंग पर परमागम ऑनर्स के विद्यार्थियों द्वारा समयसार जैसे गंभीर विषयों पर बहुत ही सरलता एवं क्रिएटिविटी के साथ वीडियो क्लिप बनाईं गईं, जिसके निर्णायक डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा रहे। कार्यक्रम के अंतिमचरण में वैश्विक स्तर पर संचालित परमागम ऑनर्स के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम घोषित किए गए।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2021

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur67@gmail.com

प्रति,